Kuwait Journal of Education
ISSN: 2984-7656
Vol 4 Issue 1 (2026)

गुरु गोबिन्द सिंह जी के वार और ग्रंथ

डॉ. गुरप्रीत कौर

प्रस्तावना

सिख इतिहास में गुरु गोबिन्द सिंह जी (1666– 1708 ई.) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे सिखों के दसवें और अंतिम मानव गुरू थे गुरू गोबिन्द सिंह जी केवल एक महान संत और धार्मिक नेता ही नहीं, बल्कि एक वीर योद्धा, समाज–सुधारक, कवि और दार्शनिक भी थे। उनके द्वारा रचित साहित्य न केवल सिख धर्म की वैचारिक धारा को पुष्ट करता है, बल्कि भारतीय वीर–काव्य परंपरा को भी समृद्ध करता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी की रचनाओं में वीर रस, धार्मिक चेतना, नैतिक आदर्श, न्याय, धर्म– रक्षा तथा मानव गरिमा का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उनके द्वारा रचित ग्रंथों और वारों ने सिख समाज को संगठित, साहसी और आत्मसम्मान से परिपूर्ण बनाया।

गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसबंर 1666 ई. को पटना साहिब (बिहार) में हुआ। उनके पिता गुरु तेग बहादुर जी नौवें सिख गुरु थे, जिन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा हेतु अपने प्राणों का बलिदान दिया। पिता के बलिदान का गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन और चेतन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उन्होने अल्पायु में ही गुरु पद संभाला और सिख समाज को एक संगठित, सैन्य और नैतिक शक्ति में परिवर्तित किया। 1699 ई. मे खालसा पंथ की स्थापना उनके जीवन की सबसे क्रांतिकारी घटना मानी जाती है।

वार परंपरा का अर्थ और महत्व :-

वार का अर्थ –

'वार' 'पंजाबी साहित्य की एक प्रमुख काव्य विधा है। इसका शाब्दिक अर्थ है– **वीरता से मुक्त कथा या युद्ध गीत**। वारों में युद्ध, शौर्य, बलिदान और नैतिक मूल्यों का वर्णन होता है।

सिख परंपरा में वार –

सिख गुरुओं के समय से ही वार परंपरा प्रचलित रही है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इस परंपरा को नई ऊंचाई दी। उनकी वारों में केवल युद्ध वर्णन नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के संघर्ष का दार्शनिक स्वरूप मिलता है

गुरु गोबिंद सिंह जी के वारों की विशेषताऐं –

1. वीर रस की प्रधानता
2. धर्म–रक्षा का संदेश
3. अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष
4. निडरता और आत्मबलिदान की भावना

5. नैतिक आदर्शों की स्थापना

गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रमुख ग्रंथ –

गुरु गोबिंद सिंह जी की रचनाएँ मुख्यतः दसम ग्रंथ में संकलित मानी जाती है इसके अतिरिक्त कुछ स्वतंत्र रचनाएँ भी हैं।

दसम ग्रंथ का परिचय

दसम ग्रंथ सिख साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमे गुरू गोबिंद सिंह जी द्वारा रचित या उनसे सम्बंधित रचनाएँ संकलित है यह ग्रंथ वीरता, भक्ति और नीति का अद्भुत संगम है।

दसम ग्रंथ की प्रमुख रचनाएँ

1. जाप साहिब – यह रचना ईश्वर के गुणों का वर्णन करती है। इसमें निराकार, सर्वशक्तिमान और निर्भय ईश्वर की स्तुति है। यह खालसा पंथ की दैनिक प्रार्थनाओं में सम्मिलित है।

2. अकाल उस्तत – इस रचना में ईश्वर की अनेतता और समानता का संदेश है। इसमें जाति–पाति और भेदभाव का खंडन किया गया है।

3. बिचित्र नाटक – यह गुरु गोबिंद सिंह जी की आत्म कथात्मक रचना मानी जाती है। इसमें उनके जीवन, संघर्ष, धार्मिक दृष्टिकोण का वर्णन है।

4. चंडी दीवार – यह एक प्रमुख वीर – काव्य है। इसमें देवी चंडी के माध्यम से अधर्म के विनाश और धर्म की विजय का प्रतीकात्मक चित्रण है।

5. चौंतीस अवतार – इसमें विष्णु के अवतारों का वर्णन है, किंतु गुरुजी स्पष्ट करते हैं कि वे किसी अवतार की पूजा नहीं, बल्कि एक ईश्वर की उपासना करते हैं।

6. शस्त्रनाम माला – इस रचना में शस्त्रो की महिमा का वर्णन है। यहां शस्त्र अन्याय के विनाश और धर्म की रक्षा के प्रतीक है।

चंडी दी वार का विशेष अध्ययन –

चंडी दी वार गुरू गोबिंद सिंह जी की सर्वाधिक प्रसिद्ध वारों में से एक है। यह दुर्गा सप्तशती से प्रेरित मानी जाती है, किंतु इसमें सिख दर्शन की स्पष्ट छाप है।

विषयवस्तु –

- देवताओं और असुरो का संघर्ष
- अधर्म पर धर्म की विजय
- शक्ति और साहस का महत्व

यह वार खालसा सैनिकों में वीरता और आत्मविश्वास जगाने के लिए रची गई।

गुरु गोबिंद सिंह जी की काव्य भाषा और शैली

भाषा –

- ब्रज
- पंजाबी

- फारसी
- संस्कृत मिश्रित हिंदी

शैली –

- ओजपूर्ण
- वीर रस प्रधान
- प्रतीकात्मक
- दार्शनिक

उनकी भाषा सरल होते हुए भी अत्यंत प्रभावशाली है।

गुरु गोबिंद सिंह जी का दर्शन

गुरु गोबिंद सिंह जी का दर्शन निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है।

- एक ईश्वर में विश्वास
- न्याय और समानता
- धर्म की रक्षा हेतु शस्त्र उठाना
- निडरता और आत्मसम्मान
- मानव गरिमा

गुरु गोबिंद सिंह जी के साहित्य का सामाजिक प्रभाव

- सिख समाज में साहस और संगठन की भावना
- अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा
- स्त्री–पुरुष समानता का समर्थन
- जातिगत भेदभाव का विरोध,

उनका साहित्य केवल धार्मिक नही, बलिक सामाजिक क्रांति का माध्यम भी है।

गुरु गोबिंद सिंह जी और भारतीय वीर–काव्य परंपरा

गुरु गोबिंद सिंह जी का साहित्य पृथ्वीराज रासो और रामचरित मानस जैसी परंपराओं से जुड़ता है, किंतु उनका दृष्टिकोण अधिक यथार्थवादी और संघर्षपूर्ण है।

समकालीन संदर्भ में गुरु गोबिंद सिंह जी की प्रासंगिकता

आज के समय में जब अन्याय, हिंसा और असमानता बढ़ रही है, गुरु गोबिंद सिंह जी का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। उनका साहित्य हमे सिखाता है कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि न्याय के लिए संघर्ष भी हो

उपसंहार

गुरु गोबिंद सिंह जी के वार और ग्रंथ सिख साहित्य की अमूल्य धरोहर है। इनमें वीरता, भक्ति, नीति और दर्शन का अद्‌भुत समन्वय मिलता है। उनका साहित्य मानव को निडर, नैतिक और न्यायप्रिय बनने की प्रेरणा देता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी केवल सिखों के गुरु नही, बल्कि संपूर्ण मानवता के पथ प्रदर्शक है। उनके ग्रंथ और वार आने वाली पीढ़ियों को धर्म, साहस और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे।

संदर्भ सूची –

1. दसम ग्रंथ
2. मैक्लियोड डब्ल्यू.एच – सिख धर्म का इतिहास
3. हरबंस सिंह – सिख धर्मकोश
4. भाई वीर सिंह – गुरु गोबिंद सिंह जीवन और दर्शन
5. सुरजीत सिंह गांधी – गुरु गोबिंद सिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व
6. डॉ. गुरबचन सिंह – सिख साहित्य का इतिहास
7. प्यारा सिंह – दसम ग्रंथ का अध्ययन